System Psy. Study material

Dr. Sunil Kumar "Suman"
Assistant Professor
Dept. of Psychology
D.B. College, Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

B.A. Part-II (H)
Paper-IV
Date-20-10-20
Do-Next class

Neo Freudians

Contribution of Erik Erikson

इरिकसन ने फ्रायड के मनोविश्लेषण के आधार को विस्तृत करने में सक्रिय भूमिका निभायी है। उन्होंने स्वयं ही यह मत जाहिर किया है कि वे फ्रायड के प्रति अधिक निष्ठा (loyal) है और उनके संप्रत्यय तथा सिद्धांत किसी भी ढंग से फ्रायडियन मनोविश्लेषण का विरोध नहीं करते है। इरिकसन ने अपने मनोविज्ञान में अहं (ego) पर न कि उपाहं (id) तथा पराहं (super ego) पर बल डला है। उनका मत था कि व्यक्ति के अहं (ego) में उनकी अनुभूतियों को संगठित करने तथा उसके व्यवहार को अर्थपूर्ण एवं अनुकूली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अहं में सर्जनात्मक गुण (creative qualities) होते है तथा प्रत्येक समस्या का एक सर्जनात्मक समाधान उपलब्ध करने की कोशिश करता है। उनका मत है कि अहं (ego) पर व्यक्ति के भीतर के बलों (inter forces) का तो प्रभाव पड़ता ही है साथ-ही-साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का भी प्रभाव पड़ता है। विकास के विभिन्न अवस्थाओं में अहं गुण (ego qualities) विकसित होते हैं, उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों के प्रभावों का प्रतिबन्ध (reflection) होता है। इस महत्वपूर्ण बल के कारण ही इरिकसन के मनोविज्ञान को अहं मनोविज्ञान (ego psychology) तथा उन्हें तथा अहं मनोवैज्ञानिक (ego psychologist) कहा जाता है। इरिकसन ने फ्रायडियन तर्ज ही विकासात्मक अवस्थाओं (developmental stages) का वर्णन किया है। वे फ्रायड द्वारा प्रतिपादित पाँच अवस्थाओं अर्थात् मुखावस्था (oral stage), गुदावस्था (anal stage), शिश्नावस्था (Phallic stage), अव्यस्कावस्था (latent stage) तथा जननेन्द्रियावस्था (genital stage) को तो स्वीकार

किये ही है साथ-ही-साथ इसमें तीन और अवस्थाओं को अर्थात आरंभिक व्यवस्थावस्था, मध्यवर्ष्कावस्था तथा वृद्धावस्था (old age) को भी जोड़ दिये हैं। इस तरह से इरिक्सन ने विकास के आठ स्तरीय सिद्धांत (eight-stage theory) का प्रतिपादन किया है। इन्होंने एपिजनन के सिद्धांत (principle of epigenesis) में विश्वास व्यक्त किया जिसके अनुसार प्राणी प्रारंभ में वृर्णन एक स्पष्ट तत्व (undifferentiated entity) होता है तथा इसमें प्राणी के सभी हिस्सों को एक क्रम (sequence) में विकसित करने की क्षमता होती है। इरिक्सन ने विकास के जो आठ अवस्थाओं का वर्णन किया है, उनके कुछ मौलिक विशेषताएँ निम्नांकित हैं —

(1). प्रत्येक अवस्था का अपनी विकासात्मक विशेषताएँ होती है तथा उसमें एक विशेष संकटावस्था (crisis) होता है। संकटावस्था से तात्पर्य व्यक्तित्व में आनेवाले एक विशेष मोड़ (turning points) से होता है जो बढ़ते हुए परिपक्वता तथा माता-पिता, शिक्षक समाज आदि द्वारा उनके सामने रखे गये विशेष मांग (demands) या प्रत्याशाओं (expectations) के अंतः क्रिया (interaction) का परिणाम होता है।

Next class